समावेशन की संस्कृति को बढ़ावा देना | एक कक्षा का वृत्तान्त

अनन्या बनर्जी

छत्तीसगढ़ के रायगढ़ ज़िले में स्थित शासकीय प्राथमिक शाला बाम्हनपाली, एक लम्बी सड़क के किनारे स्थित है। यह सड़क बाम्हनपाली गाँव को एक छोटे कस्बे खरसिया से जोड़ती है। जिस जगह यह प्राथमिक शाला स्थित है वह विद्यार्थियों और शिक्षकों दोनों के लिए सुविधाजनक है। स्कूल में आप जैसे ही प्रवेश करते हैं सबसे पहले आपको इसके परिसर में फेंका गया मलबे का ढेर नज़र आता है। स्कूल भवन में कक्षाएँ-3, 4 और 5 एक हॉल में लगती हैं, जबकि कक्षा-1 और 2 के विद्यार्थी हॉल के बगल वाले कमरे में बैठते हैं। भवन में एक और कमरा है, पर वह टूटकर गिर रहा है इसलिए उसको उपयोग में नहीं लिया जाता। दिवाली के समय एक हादसा भी हो गया था। उस कमरे की छत का पंखा (सीलिंग फैन) टूटकर नीचे गिर गया था, लेकिन छुट्टियाँ होने के कारण उस कमरे में विद्यार्थी नहीं थे इसलिए किसी को चोट नहीं आई।

इस स्कूल में जो विद्यार्थी पढ़ते हैं वे बाम्हनपाली गाँव में रहते हैं। गाँव के समुदाय की मिली-जुली जातीय संरचना है। यहाँ ज़्यादातर लोग अनुसूचित जाति (एससी) और अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के हैं और कुछ लोग आदिवासी समुदायों के हैं। बच्चों के माता-पिता अलग-अलग व्यवसाय करते हैं, जिसमें खेती और मछली पकड़ने से लेकर दूसरे प्रदेश में (ज़्यादातर मुम्बई में) श्रमिक (प्रवासी मजदूरों) के तौर पर काम करना शामिल है। इन प्रवासी मज़दूरों के परिवारों के बच्चे अपने दादा-दादी या अन्य रिश्तेदारों के साथ रहते हैं।

मेरे स्कूल जाने का उद्देश्य, स्कूल के प्रधान शिक्षक पाण्डे सर की कक्षा को देखना था, जो गणित और पर्यावरण अध्ययन पढ़ाते हैं। मेरी उनसे पहले थोड़ी-बहुत बातचीत हुई थी और मुझे पता था कि उन्हें किताबें पढ़ना अच्छा लगता है और उनकी कक्षा में किताबों के बारे जोशीली चर्चाएँ होती हैं। उनकी कक्षाओं में विज्ञान और कहानियों का अच्छा-ख़ासा संगम रहता है। उस दिन कक्षा (तीसरी, चौथी और पाँचवीं की मिली-जुली कक्षा) में *चींटियों* पर एक अध्याय पढ़ा जा रहा था। यह अध्याय कक्षा पाँचवीं की एनसीईआरटी की पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तक *आस-पास* (*Looking Around*) से था।

कक्षा का आपसी संवाद

पाण्डे सर ने चींटियों पर बुनियादी जानकारी के बारे में चर्चा से कक्षा की शुरुआत की और बच्चों से पूछा कि क्या किसी ने अपने आस-पास चींटियाँ देखी हैं। जैसी कि उम्मीद थी बच्चों ने एक सुर में "हाँ" में जवाब दिया! फिर उन्होंने अपने अनुभवों को सुनाना शुरू कर दिया। एक बच्चे ने बताया कि उसे अपने घर में बड़ी-बड़ी काली चींटियाँ नज़र आती हैं, जिनके आगे का भाग किसी 'चिमटे' जैसा होता है। एक बार, ऐसी ही एक चींटी के काटने पर उसे एक दिन के लिए बुख़ार भी आ गया था। एक बच्चे ने बताया कि उसने देखा है कि खाने का कुछ भी समान कहीं भी पड़ा रह जाने पर उसमें हमेशा लाल चींटियाँ लग जाती हैं, और फिर उनसे छुटकारा पाना बहुत मुश्किल होता है क्योंकि वे काटती हैं। एक और छात्रा ने बताया कि उसे छोटी काली चींटियाँ पसन्द हैं क्योंकि वे किसी को नुकसान नहीं पहुँचाती हैं, और जब उनमें से कोई चींटी उसके शरीर पर चढ़कर रेंगने लगती है तो उसे सुरसुरी होती है।

पाण्डे सर ने बच्चों के हर एक शब्द को सुना और प्रत्येक बच्चा अपने विचारों को साझा करे इसके लिए उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए बीच-बीच में वे चर्चा में शामिल भी हुए। इसके बाद, वे पाठ्यपुस्तक में से अध्याय को पढ़ने लगे। प्रत्येक खण्ड के बाद वे पढ़ना रोककर बच्चों से पूछते कि वे जो पढ़ रहे हैं क्या बच्चे उसे समझ पा रहे हैं। यदि बच्चों के कोई सवाल होते तो वे उनका उत्तर देते। अध्याय के अन्त में, बच्चे चींटी की शारीरिक संरचना के बारे में थोड़ी उलझन में थे। वे इसकी तुलना मानव शरीर से कर रहे थे और समझ नहीं पा रहे थे कि एक चींटी छह पैरों के साथ, जो कि उसके शरीर में नीचे से ऊपर तक होते हैं, कैसे काम कर सकती है। पाण्डे सर ने प्रस्ताव रखा कि अगले दिन चींटी की शारीरिक संरचना को बेहतर ढंग से समझने के लिए वे उसे सूक्ष्मदर्शी से देखेंगे। इस सुझाव पर बच्चे एक साथ सहमति में चिल्लाए, क्योंकि वे सूक्ष्मदर्शी का प्रयोग करने को लेकर बहुत उत्साहित थे।

जब यह सब हो रहा था तब एक छात्रा अपनी दोस्त के साथ बड़े जोश से बातें कर रही थी और वे दोनों अपनी बातों में खोए हुए थे। पाण्डे सर ने यह देख लिया और उनसे कहा कि उन्हें

भी बताएँ कि वे किस बारे में बात कर रहे हैं। वह छात्रा उठी पर बोलने में थोड़ा हिचकिचा रही थी। जब उसने बोला, तो उसने बताया कि उसके समुदाय में वे लोग चींटियाँ खाते भी हैं। यह सोचते हुए कि इस अनोखी प्रथा पर उसके सहपाठी किस तरह की प्रतिक्रिया देंगे, वह चिन्तित-सी अपने चारों ओर देख रही थी। लेकिन इससे पहले कि कोई कुछ कहता, पाण्डे सर ने उसे कक्षा में सामने बुलाया और फिर उन्होंने कक्षा को बताया कि चींटियाँ प्रोटीन का बहुत ही अच्छा स्रोत भी होती हैं और बहुत से लोग उन्हें खाते हैं। फिर उन्होंने छात्रा से यह बताने को कहा कि वे लोग चींटी को किस तरह पकाकर खाते हैं। उसने बताया कि वे पहले चींटियों को पकड़ते हैं और फिर उन्हें मिर्ची पाउडर और नमक के साथ पीसते हैं, क्योंकि ऐसा न करने पर बुख़ार आ सकता है। पीसने के बाद, वे पिसे हुए पेस्ट की गोलियाँ बनाकर तलते हैं, फिर उसे खाते हैं। फिर पाण्डे सर ने पूछा कि यदि चींटियों को खाने के बाद बुख़ार आ जाए तो क्या होता है? इस पर छात्रा ने जवाब दिया कि ऐसा होने पर वे रात भर माथे पर गीले कपड़े की पट्टी रखकर सोते हैं और आमतौर पर अगली सुबह तक बुख़ार चला जाता है। कक्षा यहीं पर ख़त्म हो गई।

विश्लेषण

कक्षा में एक अत्यधिक महत्त्वपूर्ण क्षण तब आया जब एक विद्यार्थी ने चींटी खाने की अपनी सांस्कृतिक प्रथा के बारे में बताया। पाण्डे सर ने इस प्रथा को ख़ारिज करने की बजाय प्रथा के सांस्कृतिक महत्त्व को जानने के लिए इस अवसर का लाभ उठाया, और इस तरह शुरुआती स्तर से ही कक्षा के भीतर विविध सांस्कृतिक पहचानों को सम्मान देने के भाव को बढ़ावा मिला। यह समावेशी नज़रिया बहुसांस्कृतिक शिक्षा के सिद्धान्तों के साथ मेल खाता है, जो विविधता का उत्सव मनाने और विद्यार्थियों के बीच विविध सांस्कृतिक अनुभवों को बढ़ावा देने की वकालत करती है।

प्राथमिक स्कूल बाम्हनपाली और पाण्डे सर सीखने के समावेशी वातावरण को बढ़ावा देने में शिक्षकों की दृढ़ता की मिसाल पेश कर रहे हैं। स्कूल अपने विद्यार्थियों की विविध ज़रूरतों को पूरा करने का प्रयास करते हुए समावेशिता के दर्शन को अपनाता है।

कुल मिलाकर, प्राथमिक स्कूल बाम्हनपाली में मेरा अनुभव समावेशी शिक्षा की परिवर्तनकारी क्षमता में मेरे विश्वास को और पुख़्ता करता है। विविधता को अपनाकर, निष्पक्षता और समावेश की संस्कृति को बढ़ावा देकर हम सीखने का एक ऐसा समावेशी माहौल बना सकते हैं जिसमें हर विद्यार्थी महसूस करे कि उसे महत्त्व दिया जा रहा है, सहयोग दिया जा रहा है और वह अपनी पूरी क्षमता तक पहुँचने में समर्थ है। निरन्तर प्रतिबद्धता और सहयोग के माध्यम से हम ऐसे समावेशी शिक्षा समुदायों का निर्माण जारी रख सकते हैं, जो विविधता का उत्सव मनाते हैं और सभी विद्यार्थियों के समग्र विकास को बढ़ावा देते हैं।

समावेशी व्यवहार बाधाओं को हटाकर और समान अवसर देकर अलग-अलग पृष्ठभूमियों, संस्कृतियों और क्षमताओं वाले विद्यार्थियों में सम्बद्धता और स्वीकार्यता की भावना पैदा करता है। विविधता का यह उत्सव, अधिक समावेशी व संयुक्त समाज की नींव में योगदान देते हुए विद्यार्थियों के बीच समानुभूति, आपसी समझ और सम्मान की भावना को पोषित करता है।

इसके अलावा, कलंक और भेदभाव को कम करने में समावेशी व्यवहार एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, वे रूढ़िबद्ध धारणाओं को चुनौती देते हैं और सभी के लिए एक अधिक समावेशी वातावरण बनाते हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि प्रत्येक विद्यार्थी को फलने-फूलने का अवसर मिले।

एक सकारात्मक कक्षा संस्कृति विद्यार्थियों के सीखने के लिए बहुत ज़रूरी है क्योंकि यह एक ऐसे वातावरण का निर्माण करती है, जहाँ विद्यार्थी सीखने की क्रिया में सक्रिय रूप से भागीदारी करने के लिए सुरक्षित और प्रेरित महसूस करने के अलावा यह भी महसूस करते हैं कि उन्हें सहयोग दिया जा रहा है।

अनन्या बनर्जी अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन, रायपुर, छत्तीसगढ़ में रिसोर्स पर्सन के रूप में कार्य करती हैं। इस भूमिका के पूर्व वे सेंट ज़ेवियर्स कॉलेज, बर्धमान, पश्चिम बंगाल के समाजशास्त्र विभाग में पढ़ाती थीं। उन्होंने समाजशास्त्र में एमफिल किया है और शिक्षा के क्षेत्र में फील्ड–आधारित शोधकार्य करने में उनकी गहरी रुचि है। उनसे ananya.banerjee@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : प्रियेश गुप्ता **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** शहनाज़